जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :डॉ. शेखर सिंह बघेल
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 203
दिनांक 16.12.2022

जनेकृविवि की सोयाबीन (जे.एस.–21–72) प्रजाति को कृषि मंत्रालय भारत सरकार ने किया अधिसूचित
कृषि वैज्ञानिकों की मेहनत रंग लाई, किसानों को मिलेगी सोयाबीन की नवीनतम किस्म की सौगात

जबलपुर 16 दिसम्बर 2022। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा की सद्प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में कृषि वैज्ञानिकों ने सतत् समर्पण व शोध से सोयाबीन की नवीनतम प्रजाति को तैयार किया गया है। इस किस्म को कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अधिसूचित किया गया। कुलपति डॉ. मिश्रा ने विस्तार से जानकारी देते हुये बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा तैयार सोयाबीन की जवाहर सोयाबीन किस्म को कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अधिसूचित किया गया है। यह उपलब्धि कृषि वैज्ञानिकों की अथक मेहनत और परिश्रम का नतीजा है जो किसानों के हितार्थ के लिये विकसित की गई हैं। उन्होंने कहा कि सोयाबीन जे.एस. 21–72 किस्म 4 वर्षो से विभिन्न परीक्षणों में खरी उतरी है, तथा यह मध्य क्षेत्र अर्थात् मध्यप्रदेश , राजस्थान, महाराष्ट्र, विदर्भ, उत्तर प्रदेश का बुन्देलखंड क्षेत्र के लिये अनुशंसित की गई है। वैज्ञानिकों की इस उपलब्धि पर कुलपति द्वारा प्रसन्नता व्यक्त कर भविष्य में और भी शीघ्र पकने वाली तथा प्रतिकूल मौसम में भी विपुल उत्पादन देने वाली जातियों के विकास हेतु इस दिशा में सतत्कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया, एवं आपने कहा कि हमारे कृषकों हेतु आगामी वर्षो हेतु यह एक उत्कृष्ट सौगात है।

नवीनतम सोयाबीन की खासियत–

मध्यप्रदेश सोयाबीन का एक प्रमुख उत्पादक राज्य है, भारत वर्ष में मध्यप्रदेश सोया राज्य के रूप में जाना जाता है। देश की 50 प्रतिशत सोयाबीन मध्यप्रदेश द्वारा पैदा की जाती है। मौसम के बदलते परिवेश में सोयाबीन अनेको कीट एवं व्याधियों की समस्या से जूझ रही है। इन सब समस्याओं को देखते भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा, वित्तपोषित सोयाबीन अनुसंधान परियोजना, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर द्वारा विकसित किस्म जवाहर सोयाबीन 21–72 को भारत सरकार, कृषि मंत्रालय की केन्द्रीय प्रजाति अनुमोदन समिति द्वारा अधिसूचित किया गया है। अनुकूल परिस्थितियों में 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर से अधिक उत्पादन के साथ–साथ मध्यम अवधि (98 दिवस), बहुरोग रोधिता, उच्च अंकुरण क्षमता, आकर्षक दाना, नाभि का रंग कत्थाई, अधिक जड़ ग्रंथियां आदि प्रमुख गुण है। विश्वविद्यालय द्वारा इसके बीज का उत्पादन प्रारंभ कर दिया गया है तथा इस किस्म का बीज कृषकों को आने वाले वर्षो में प्राप्त होगा। इस नवीन किस्म को विकसित करने में पौध प्रजनन विभाग के सोयाबीन विशेषज्ञ डॉ. मनोज श्रीवास्तव, डॉ. पवन अमृते एवं श्री ज्ञानेन्द्र सिंह का विशेष योगदान है। विश्वविद्यालय के संचालक अनुसंधान सेवायें, डॉ. जी. के. कौतू एवं पौध प्रजनक एवं अनुवांशिकी विभाग के विभागाध्यक्ष, डॉ. आर. एस. शुक्ला का इस किस्म के विकास में अतिमहत्वपूर्ण सहयोग रहा। मध्यप्रदेश ही नही वरन देश के सोयाबीन उत्पादक कृषक इस किस्म की खेती कर लाभांवित होगें।

इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. धीरेन्द्र खरे, संचालक अनुंसधान सेवायें, डॉ. जी. के. कौतू, संचालक शिक्षण डॉ. अभिषेक शुक्ला, संचालक विस्तार सेवायें डॉ. दिनकर शर्मा, संचालक प्रक्षेत्र डॉ. दीप पहलवान, अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. अमित शर्मा, कुलसचिव श्री रेवासिंह सिसोदिया, लेखानियंत्रक श्री व्ही. एन बाजपेयी, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. पी.बी. शर्मा, कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. अतुल श्रीवास्तव, आईपीआरओ डॉ. शेखर सिंह बघेल एवं समस्त वैज्ञानिक ने इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर बधाईयां दी।